Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ **Class:V A 2025-26**

नाम:_____

सुप्रभात !

हम कक्षा पाँचवी 'अ' के विद्यार्थी है। आज हम आप सभी के समक्ष कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारी कविता का शीर्षक **'फागुन में सावन'** है| इसके कवि **शिवमंगल सिंह 'सुमन'** है |

आज कहाँ से फिर आ पहुँचा
फागुन में सावन !
सुबह उड़ी थी धूल
शाम को घिर आए बादल
बासंती रातों में बरसा
किन आँखों का जल
पतझर की नंगी डालों में पुलक उठा यौवन।
आज कहाँ से फिर आ पहुँचा फागुन में सावन !
सौंधी-सौंधी मिट्टी महकी
गमक उठा उपवन
बिजली कौंधी आसमान में
धरती में सिहरन
होली में कजली गाने को फिर ललचाया मन।
आज कहाँ से फिर आ पहुँचा फागुन में सावन !
हरियाली का स्वप्न
थिरकने लगा पुतलियों में
अलियों का उन्माद
कि शोखी आई कलियों में
तपन बिना क्या मूल्य तुम्हारा, जीवन-धन रस-घन।
आज कहाँ से फिर आ पहुँचा फागुन में सावन !

धन्यवाद!

Daly College, Jr. School

हिन्दी सामूहिक कविता पाठ **Class:V B 2025-26**

नाम:_____

सुप्रभात !
हम कक्षा पाँचवी 'ब' के विद्यार्थी है। आज हम आप सभी के समक्ष कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं। हमारी कविता का शीर्षक है- **'माँ! ये लहरें भी गाती हैं'**। यह एक संकलित कविता है।

माँ! ये लहरें भी गाती हैं,
कल-कल छल-छल के मधुर स्वरों में, अपने गीत सुनाती हैं।
मैं देख रही थी अभी-अभी, ये भी मुझ जैसी मचल रही।

क्या जानें अब क्या मिला इन्हें, भर-भर उमंग में उछल रही।
तट से आ-आकर हँस-हँसकर, अपनी बातें कह जाती हैं।
माँ! ये लहरें भी गाती हैं।

मैं कब से बुला रही इनको, पर मेरे पास नहीं आतीं।
कुछ खेल खेलतीं इसीलिए, तट तक आकर फिर भग जातीं।
मैं चलूँ साथ खेलूँ इनके, देखो ये मुझे बुलाती हैं।
माँ! ये लहरें भी गाती हैं।

अपने संग खेल-खिलाने ये, शशि को उतार लाई नभ से।
हर एक लहर के साथ-साथ, शशि भी है खेल रहा तब से।
कैसे धीमे-धीमे जल के, झूले पर उसे झुलाती हैं।
माँ! ये लहरें भी गाती हैं।

रुकती न कभी ये क्षण भर भी, जीवन भर बढ़ना सीखा है।
भर-भर उमंग सदा हृदय में, आगे बढ़ना ही सीखा है।
हँस-हँसकर जीवन पथ पर बढ़ते जाओ, यह कहती आती हैं।
माँ! ये लहरें भी गाती हैं|
धन्यवाद!

Daly College , Jr. School Indore

सामूहिक कविता पाठ

Name ---------- Class &Section ----------

"कोशिश करने वालों की "

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,

चढ़ती दीवारों पर,

सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,

चढ़कर गिरना,

गिरकर चढ़ना न अखरता है।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,

जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।

मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,

बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।

मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,

क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।

जब तक न सफल हो,

नींद चैन को त्यागो तुम, संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।

कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

हरिवंशराय बच्चन

Daly College, Jr. School

सामूहिक कविता पाठ **कक्षा: V 'D'**

नाम - _____

नमस्ते! आज हम कक्षा पाँचवीं द के विद्यार्थी 'युग-युग से है अपने पथ पर देखो कैसा खड़ा हिमालय!' कविता प्रस्तुत करेंगे, जिसके कवि 'श्री सोहनलाल द्विवेदी जी' हैं।

युग-युग से है अपने पथ पर
देखो कैसा खड़ा हिमालय!
डिगता कभी न अपने प्रण से
रहता प्रण पर अड़ा हिमालय!

डिगता कभी न अपने प्रण से
रहता प्रण पर अड़ा हिमालय!

जो भी बाधाएँ आईं
उन सब से ही लड़ा हिमालय,
इसीलिए तो दुनिया भर में
हुआ सभी से बड़ा हिमालय!

इसीलिए तो दुनिया भर में
हुआ सभी से बड़ा हिमालय!

अगर न करता काम कभी कुछ
रहता हरदम पड़ा हिमालय

तो भारत के शीश चमकता
नहीं मुकुट-सा जड़ा हिमालय!

तो भारत के शीश चमकता
नहीं मुकुट-सा जड़ा हिमालय!

खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आंधी, पानी में,
खड़े रहो अपने पथ पर
सब कठिनाई तूफानी में!

खड़े रहो अपने पथ पर
सब कठिनाई तूफानी में!

डिगो न अपने प्रण से तो
सब कुछ पा सकते हो प्यारे!
तुम भी ऊँचे हो सकते हो
छू सकते हो नभ के तारे!!

तुम भी ऊँचे हो सकते हो
छू सकते हो नभ के तारे!!

अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में,
मिली सफलता जग में उसको
जीने में मर जाने में!!

मिली सफलता जग में उसको
जीने में मर जाने में!!

******----------*******